Volume-13, No. 1 Feb.-2026, pp. Hin.22-30

ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन

श्रीमति प्रियंका, रिसर्च स्कॉलर
प्रो. रीना शर्मा, आचार्य शोध निर्देशक
एस.डी.पी.जी. कालेज गाजियाबाद उत्तर–प्रदेश भारत।
(चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ उत्तर–प्रदेश भारत)

सारांश–
एक समृद्ध एवं सशक्त समाज का निर्माण समाज के मूलभूत स्तंभों (स्त्री, पुरुष) की समानता से ही संभव है। राष्ट्र के सम्पूर्ण समावेशी विकास हेतु महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देना आवश्यक है। समाज के सतत् विकास हेतु ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा के साथ साथ आर्थिक मजबूती एवं सामाजिक जागरूकता भी आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन उपरांत पाया गया कि ग्रामीण महिलाएँ कृषि, पशुपालन एवं घरेलू कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्तिकरण की तरफ बढ़ रही है और साथ–साथ विभिन्न सरकारी, आर्थिक व सामाजिक योजनाओं से लाभान्वित हो रही हैं। अनेक प्रकार के सामाजिक संगठनों, समितियों में सक्रिय भागीदारी व सार्वजनिक मुद्दों पर जागरुकता पायी गई हैं।
मुख्य बिन्दु– सशक्तिकरण, आर्थिक उत्थान, सामाजिक जागरूकता, कौशल विकास।

प्रस्तावना–भारत प्राचीन समय से अपनी संस्कृति, सभ्यता, परंपरा और भौगोलिक विशेषताओं के लिए जाना जाता है एवं साथ साथ पुरुषवादी विचारधारा के लिए भी जाना जाता है मुख्यतः भारतीय समाज में महिलाओं को केवल पारिवारिक जिम्मेदारियों हेतु प्राथमिकता दी जाती है। भारत सहित विश्व में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 50 प्रतिशत है परंतु विकास में भागीदारी की बात की जाए तो लगभग 20 प्रतिशत ही रहती है।

"रोजगार की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन करते समय यह देखना आवश्यक है कि व्यक्ति को काम कितने समय के लिए और किस प्रकार का मिला है, केवल काम करने वालों की संख्या से श्रम बाजार की सही स्थिति का आकलन नहीं किया जा सकता।" (जी. रवींद्रन जून 2010)

सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम जैसे शिक्षा, तकनीकी कौशल विकास, आर्थिक आयाम, राजनीतिक, सामाजिक आयाम द्वारा स्वयं को सशक्त करने की क्रिया को कहते हैं तथा किसी व्यक्ति विशेष या संगठन को विशेष क्षेत्र में शक्ति प्रदान करने की क्रिया को भी कहते हैं। महिला सशक्तीकरण एवं लैंगिक समानता एक मजबूत एवं सुदृढ़ समाज के निर्माण में सहायक है। महिला सशक्तिकरण के विभिन्न पैमाने है जैसे शिक्षा , स्वास्थ्य, अवसर की समानता, संसाधनों तक समान पहुँच तथा अपने जीवन से जुड़े निर्णय लेने की क्षमता जिनके माध्यम से व्यक्ति विशेष की बाह्य प्रगति के साथ–साथ आंतरिक प्रगति भी संभव हो सके। महिला सशक्तीकरण को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शिक्षा, तकनीकी कौशल विकास मुख्य आयामों में विभाजित किया जा सकता है। सामाजिक सशक्तिकरण हेतु महिलाओं को स्वतंत्र रूप से सभी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक गतिविधियों में सहभागिता के साथ साथ विभिन्न सामाजिक परंपराओं, मानदंडों में आधुनिक व सकारात्मक परिवर्तन हेतु सक्षम हो सके और अपने सामाजिक अधिकारों जैसे लैंगिक हिंसा, घरेलू उत्पीड़न तथा मानसिक प्रताड़ना के खिलाफ विरोध करने में सक्षम हो सकें और विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक मुद्दों के प्रति जागरूक हो। रोजगार व अवसर की समानता, उद्यमिता, कौशल क्षमता का विकास तथा विभिन्न आर्थिक वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता व समान कार्य के लिए समान वेतन महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण को दर्शाता है। महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण से आशय विभिन्न राजनैतिक प्रक्रियाओं जैसे नीति निर्माण योजनाओं व राजनैतिक प्रतिनिधित्व, स्वैच्छिक मतदान, सामुदायिक निर्णयों में महिलाओं की

बराबर भागीदारी एवम् पहुँच होनी चाहिए। महिला सशक्तिकरण में शिक्षा एक महत्वपूर्ण आयाम है शिक्षा केवल रोजगार प्राप्ति में ही सहायक नहीं बल्कि व्यक्ति के विवेक तथा तर्क–वितर्क की क्षमता का विकास भी करती है, सशक्तिकरण व शिक्षा एक ऐसा सहसंबंध है जो व्यक्ति को परिपूर्णता की तरफ ले जाता हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में आर्थिक कारकों की पहचान करना।

2. ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का विश्लेषण करना।

साहित्यिक पुनरावलोकन–

1.ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की आर्थिक स्थिति का प्रस्तुत अध्ययन में लेखिका द्वारा महिलाओं को स्वयं की आय प्राप्ति में आने वाली बाधाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार विभिन्न सामाजिक व सांस्कृतिक मान्यताएं ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रुप से सशक्त होने में रुकावटें पैदा करती हैं और असमानताओं में भेदभाव के कारण महिलाओं की क्षमता कहीं न कहीं दब जाती है। "ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आय तथा समाज में निर्णय लेने की क्षमता सम्मिलित होती है, निधि गुप्ता (2012). जो उनके जीवन स्तर और विकास को प्रभावित करती है।" अध्ययन में सरकारी व गैर सरकारी योजनाओं नीतियों विकास कार्यक्रमों तक महिलाओं की पहुँच पर प्रकाश डाला गया है। "महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति वह अवस्था है जिसमें समाज में उनकी भागीदारी, शिक्षा का स्तर, आर्थिक स्वतंत्रता, निर्णय लेने की क्षमता तथा संसाधनों तक उनकी पहुँच को सम्मिलित किया जाता है।" प्रो० महालक्ष्मी जौहरी (2014)।

2. भारत के आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं की सक्रियता प्रस्तुत अध्ययन में लेखिका द्वारा दर्शाया गया कि आर्थिक विकास की दौड़ में शहरी महिलाओं के साथ साथ ग्रामीण महिलाओं को नकार नहीं सकते। ग्रामीण विकास पुनर्निर्माण महिला विशेष कार्यक्रमों, आरक्षण आदि ने महिला सुदृढ़ता को गति प्रदान की है। "महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति से आशय उस अवस्था से है जिसमें समाज में महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, आय के साधन, कार्य में भागीदारी तथा निर्णय लेने की क्षमता शामिल होती है, जो उनके जीवन–स्तर और सामाजिक सम्मान को निर्धारित करती है।" अर्चना राय (2013) लेखिका द्वारा इस तथ्य पर भी प्रकाश डाला गया कि प्राचीन भारत की अपेक्षा वर्तमान में महिलाओं की आर्थिक सहभागिता कम हुई है। "आधुनिक साहित्य में महिला–चिन्तन के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि शैक्षिक तकनीकी दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन में शिक्षा की पहुँच, समान अवसर और आत्मनिर्भरता को बढ़ाने का एक प्रभावी साधन है। तकनीक आधारित शिक्षण–साधन दिव्यांगों की सीखने की बाधाओं को कम करते हैं तथा उन्हें सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में सहायक होते हैं।" सनोज कुमार एवं विनोद कुमार कंवरिया (2024)

अध्ययन विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेषणातक व विवरणात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी तथा लिखित व अलिखित स्रोतों, रिर्पोटों व पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है। आगमनात्मक पद्धति को आधार मानकर अध्ययन किया गया है तथा प्राथमिक स्रोत अनुसंधान की सहायता से दो सौ साक्षात्कार अनुसूचियों के माध्यम से उपरोक्त बिंदुओं का विश्लेषण किया गया है। दोनों गावों से 15 से 50 आयु वर्ग तक की उत्तरदात्रियों का चुनाव किया गया हैं। दो सौ उत्तरदात्रियों मैं 72–गुर्जर, 10–प्रजापति, 5.5–ब्राह्मण, 5–वाल्मीकि, 5–नाई, 2.5–सैफी आदि जातियाँ पायी गई है।

अध्ययन क्षेत्र–

प्रस्तुत अध्ययन पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जनपद गौतमबुद्ध नगर के दादरी ब्लॉक के दो ग्राम कोट डेरीन एवं कोट का अध्ययन किया गया हैं।

परिणाम–

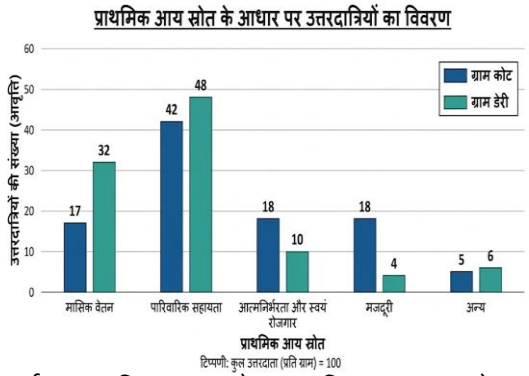

उपर्युक्त तालिका–1 में प्राथमिक आय श्रोत के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है, जिसमें परिवार के द्वारा ग्राम कोट में 17: तथा

ग्राम कोट डेरीन में 32: मासिक वेतन मिलता है तथा पारिवारिक सहायता कोट में 42:, कोट डेरीन में 48: एवं स्वयं रोजगार 18: कोट और 10: कोट डेरीन गांव तथा कुछ महिलाएं जैसे 18: कोट ग्राम और 4: कोट डेरीन गांव में मजदूरी का आय श्रोत पाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण महिलाओं का मुख्य आय श्रोत पारिवारिक सहायता है।

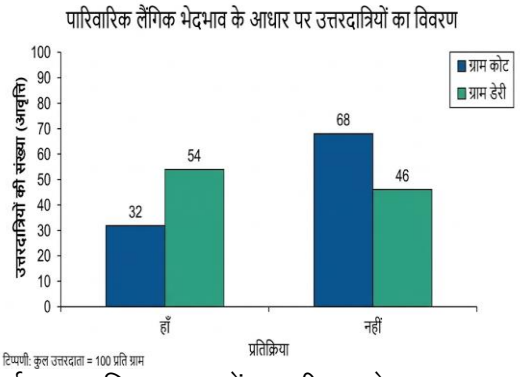

उपर्युक्त तालिका–3 में जमीन के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में एक एकड जमीन 8: कोट गांव व 6: कोट डेरीन गांव में, एक से पांच एकड 22: कोट गांव व 49: कोट डेरीन गांव, 5 से 10 एकड 8: कोट गांव व 26: कोट डेरीन गांव, 10 एकड से ज्यादा 13: कोट गांव व 14: कोट डेरीन गांव तथा 49: कोट तथा 15: कोट डेरीन गांव में ऐसे व्यक्ति भी पाए गए जिनके पास जमीन का अभाव था।

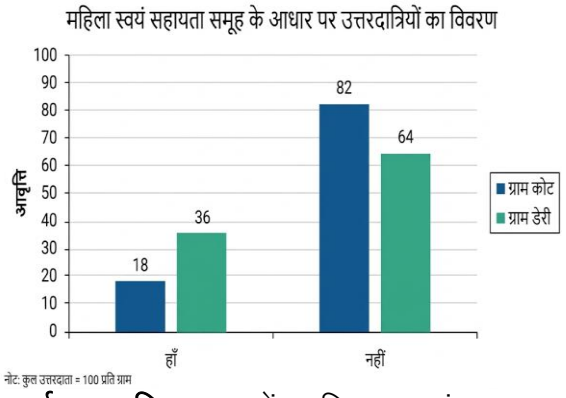

उपर्युक्त तालिका–4 में महिला स्वयं सहायता समूह के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 18: कोट गांव व 36: कोट डेरीन गांव में महिला स्वयं सहायता समूह का सामाजिक संगठन पाया गया।

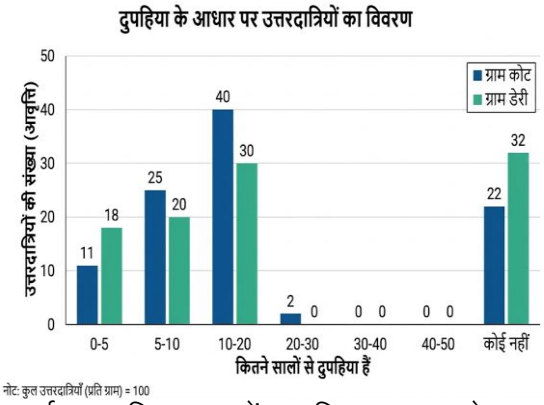

उपर्युक्त तालिका–5 में दुपहिया वाहन के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 11: कोट गांव में व 18: कोट डेरीन गांव में महिलाएं पिछले 5 साल से दुपहिया वाहन का प्रयोग के रही हैं। 25: कोट गांव व 20: कोट डेरीन गांव में पिछले 10 साल से दुपहिया वाहन का प्रयोग कर रही है, 40: कोट गांव व 30: कोट डेरीन गांव में महिलाएं पिछले 20 साल से दुपहिया वाहन का प्रयोग कर रही हैं। अंत में 2: कोट गांव व 0: कोट डेरीन गांव में पिछले 30 साल से महिलाओं द्वारा दुपहिया वाहन का प्रयोग किया गया है।

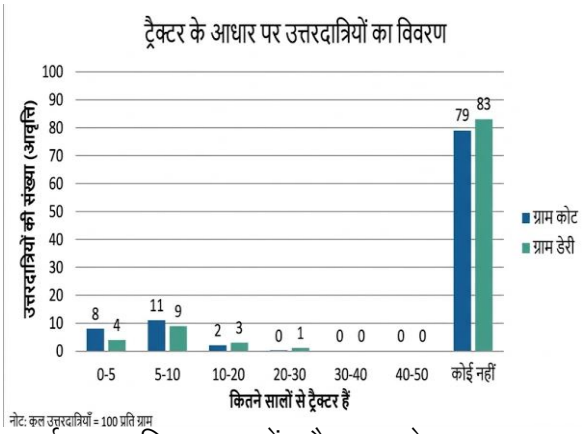

उपर्युक्त तालिका–6 में ट्रैक्टर के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 8: कोट गांव व 4: कोट डेरीन गांव पिछले 5 साल, 11: कोट व 9: कोट डेरीन गांव पिछले 10 साल, 2: कोट गांव व 3: कोट डेरीन गांव पिछले 20 साल, 0: कोट गांव व 1: कोट डेरीन गांव पिछले 30 साल से ट्रैक्टर का प्रयोग कर रहे हैं।

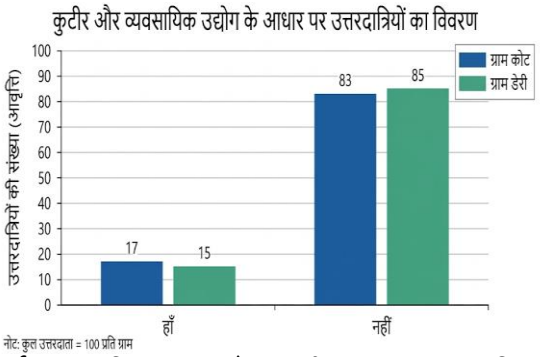

उपर्युक्त तालिका–7 में कुटीर व व्यावसायिक उद्योग के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। इस तालिका में 17: कोट गांव व 15: कोट डेरीन गांव में ग्रामीण महिलाएं कुटीर व व्यावसायिक उद्योग से जुड़ी हुई हैं।

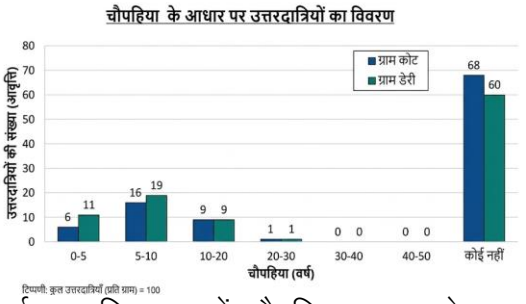

उपर्युक्त तालिका–8 में चौपहिया वाहन के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। इस तालिका में 6: कोट गांव व 11: कोट डेरीन गांव पिछले 5 साल, 16: कोट गांव व 19: कोट डेरीन गांव पिछले 10 साल, 9: कोट गांव व 9: कोट डेरीन गांव पिछले 20 साल, 1: कोट गांव व 1: कोट डेरीन गांव पिछले 30 साल से चौपहिया वाहन का प्रयोग कर रहे हैं।

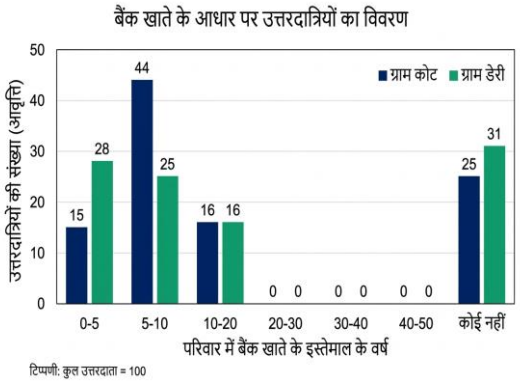

उपर्युक्त तालिका–9 में बैंक खातों के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। इस तालिका में 15: कोट गांव व 28: कोट डेरीन गांव पिछले 5 साल से,44: कोट गांव व 25: कोट डेरीन गांव पिछले 10 साल से, 16: कोट गांव व 16: कोट डेरीन गांव पिछले 20 साल से महिलाएं बैंक खाते से जुड़ी हुई है।

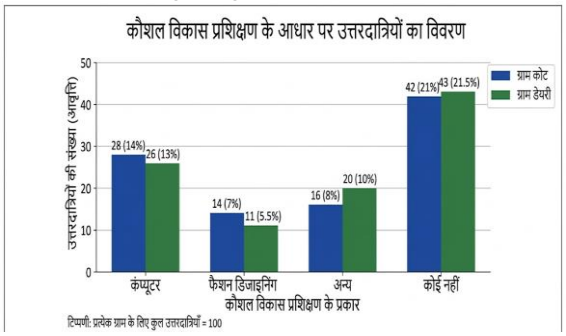

उपर्युक्त तालिका–11 में कौशल विकास प्रशिक्षण के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। इस तालिका में 14: कोट गांव व 13: कोट डेरीन गांव की ग्रामीण महिला कंप्यूटर का बेसिक ज्ञान रखती हैं। 7: कोट गांव व 5.5: कोट डेरीन गांव फैशन डिजाइन का ज्ञान रखती हैं। 8: कोट गांव व 10: कोट डेरीन गांव की महिलाएं अन्य कौशल विकास प्रशिक्षण युक्त पाई गई।

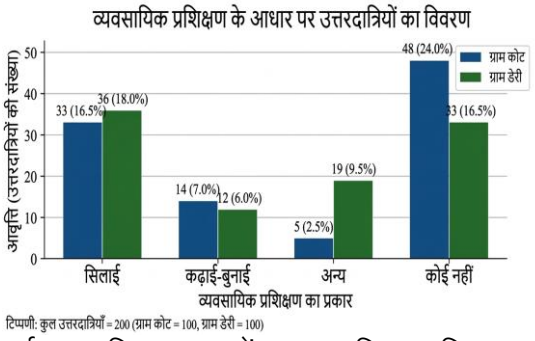

उपर्युक्त तालिका–12 में व्यावसायिक प्रशिक्षण के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 16.5: कोट गांव व 18: कोट डेरीन गांव सिलाई प्रशिक्षण, 7: कोट गांव व 6: कोट डेरीन गांव कढ़ाई व बुनाई में प्रशिक्षित महिलाएं पाई गई। 2.5: कोट गांव व 9.5: कोट डेरीन गांव में महिलाएं अन्य कलाओं से प्रशिक्षित महिलाएं पाई गई।

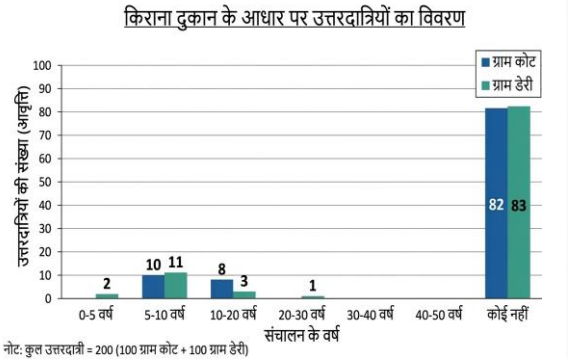

उपर्युक्त तालिका 13 में किराना दुकान के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 0: कोट गांव व 2: कोट डेरीन गांव में पिछले 5 साल से, 10: कोट गांव व 11: कोट डेरीन गांव पिछले 10 वर्षों से, 8: कोट गांव व 3: कोट डेरीन गांव पिछले 20 साल में, 0: कोट गांव व 1: कोट डेरीन गांव पिछले 30 वर्षों से महिलाएं किराना दुकान का व्यवसाय करती पाई गई है

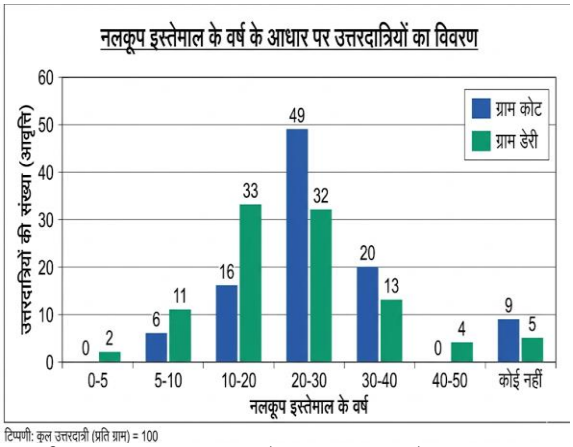

उपर्युक्त तालिका–14 में नलकूप के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 0: कोट गांव व 2: कोट डेरीन गांव पिछले 5 वर्षों से, 6: कोट गांव व 11: कोट डेरीन गांव पिछले 10 वर्षों से, 16: कोट व 33: कोट डेरीन गांव पिछले 20 साल से, 49: कोट गांव व 32: कोट डेरीन गांव पिछले 30 वर्षों से, 20: कोट गांव व 13: कोट डेरीन गांव पिछले 40 वर्षों से, 0: कोट गांव व 4: कोट डेरीन गांव पिछले 50 वर्षों से नलकूप का प्रयोग कर रही हैं

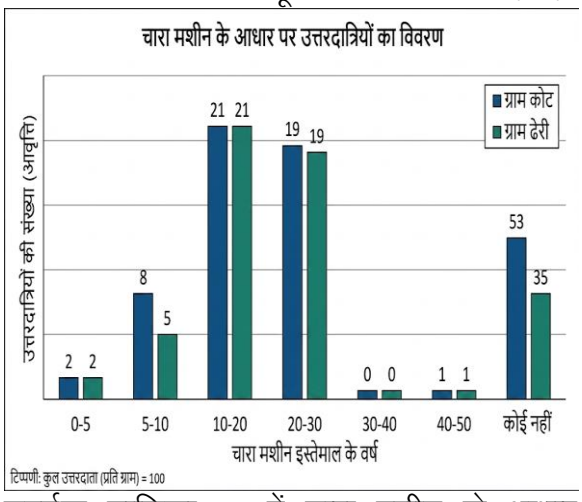

उपर्युक्त तालिका–15 में चारा मशीन के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 2: कोट गांव व 2: कोट डेरीन गांव पिछले 5 वर्षों से, 8: कोट गांव व 5: कोट डेरीन गांव पिछले 10 वर्षों से, 21: कोट गांव व 21: कोट डेरीन गांव पिछले 20 वर्षों से, 19: कोट गांव व 19: कोट डेरीन गांव में पिछले 30 वर्षों से, 1: कोट गांव व 1: कोट डेरीन गांव पिछले 50 वर्षों से महिलाएं चारा मशीन का प्रयोग कर रहीं हैं।

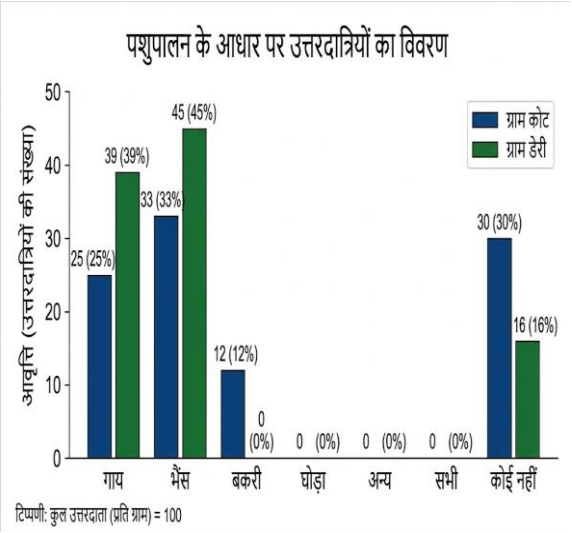

उपर्युक्त तालिका–16 पशुपालन के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 25: कोट गांव व 39: कोट डेरीन गांव में गाय, 33: कोट गांव व 45: कोट डेरीन गांव में भैंस, 12: कोट गांव व 0: कोट डेरीन गांव में बकरी का पालन महिलाओं द्वारा किया गया।

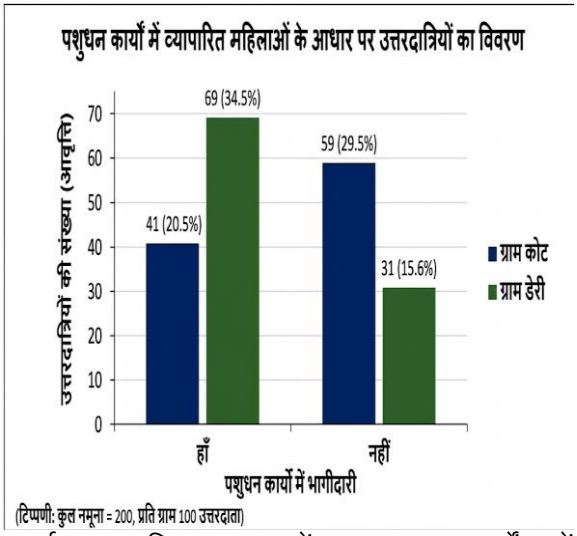

उपर्युक्त तालिका–17 में पशुधन कार्यों में व्यापारित महिलाओं के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। 20.5: कोट गांव व 34. 5: कोट डेरीन गांव में पशुधन कार्यों में व्यापारित महिलाओं की भागीदारी पाई गई।

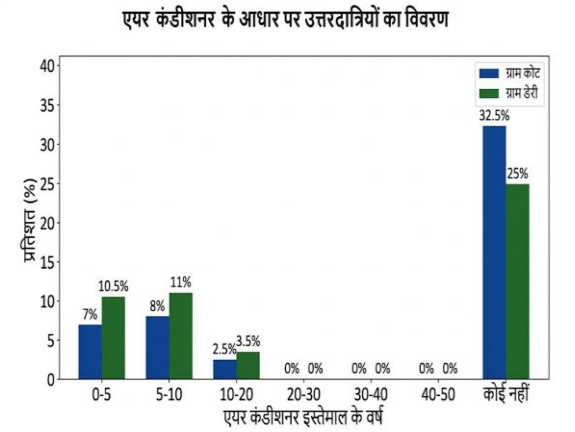

उपर्युक्त तालिका–18 में एयर कंडीशनर के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 7: कोट गांव व 10.5: कोट डेरीन गांव पिछले 5 वर्षों से, 8: कोट गांव व 11: कोट डेरीन गांव पिछले 10 वर्षों से, 2.5: कोट गांव व 3.5: कोट डेरीन गांव पिछले 20 वर्षों से महिलाएं एयर कंडीशनर का प्रयोग करती पाई गई हैं।

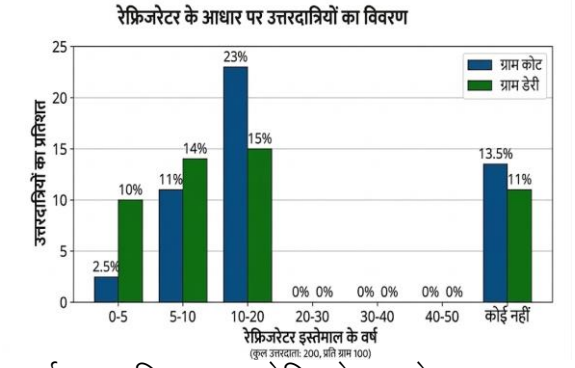

उपर्युक्त तालिका–19 रेफ्रिजरेटर के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। 2.5: कोट गांव व 10: कोट डेरीन गांव पिछले 5 वर्षों से, 11: कोट गांव व 14: कोट डेरीन गांव पिछले 10 वर्षों से, 23: कोट गांव व 15: कोट डेरीन गांव पिछले 20 वर्षों से महिलाएं रेफ्रिजरेटर का प्रयोग करती हैं।

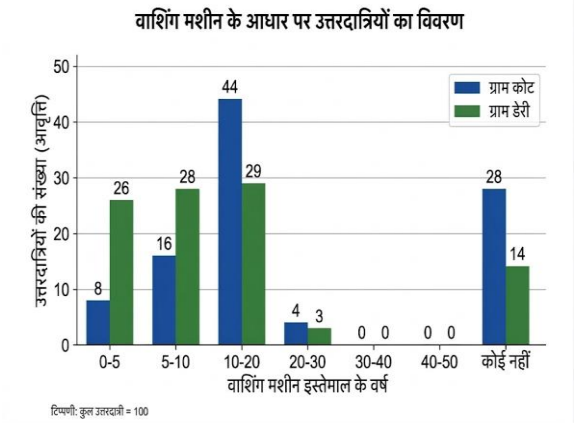

उपर्युक्त तालिका–20 वाशिंग मशीन के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 8: कोट गांव व 26: कोट डेरीन गांव पिछले 5 वर्षों में, 16: कोट गांव व 28: कोट डेरीन गांव पिछले 10 वर्षों में, 44: कोट गांव व 29: कोट डेरीन गांव पिछले 20 वर्षों में, 4: कोट गांव व 3: कोट डेरीन गांव पिछले 30 वर्षों से महिलाएं वाशिंग मशीन का उपयोग करती हैं।

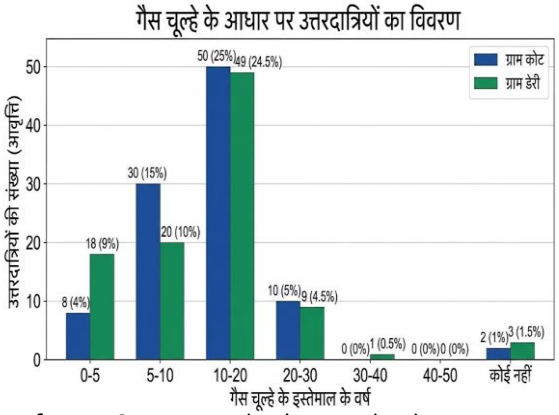

उपर्युक्त तालिका–21 में गैस चूल्हे के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। 4: कोट गांव व 9: कोट डेरीन गांव पिछले 5 वर्षों से, 15: कोट गांव व 10: कोट डेरीन गांव पिछले 10 वर्षों से, 25: कोट गांव व 24.5: कोट डेरीन गांव पिछले 20 वर्षों से, 5: कोट गांव व 4.5: कोट डेरीन गांव पिछले 30 वर्षों से, 0: कोट गांव व 0. 5: कोट डेरीन गांव पिछले 40 वर्षों से महिलाएं गैस चूल्हे का प्रयोग कर रही हैं।

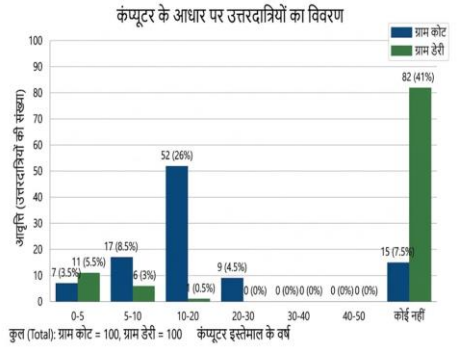

उपर्युक्त तालिका–22 कंप्यूटर के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 3.5: कोट गांव व 5.5: कोट डेरीन गांव पिछले 5 वर्षों से, 8.5: कोट गांव व 3: कोट डेरीन गांव पिछले 10 वर्षों में, 26: कोट गांव व 0.5: कोट डेरीन गांव पिछले 20 वर्षों से, 4.5: कोट गांव व 0: कोट डेरीन गांव पिछले 30 वर्षों से महिलाएं प्रयोग कर रही हैं

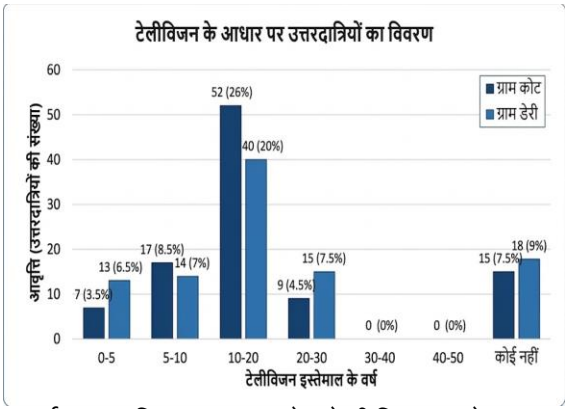

उपर्युक्त तालिका– 23 में टेलीविजन के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 3.5: कोट गांव व 6.5: कोट डेरीन गांव पिछले 5 वर्षों से, 8.5: कोट गांव व 7: कोट डेरीन गांव पिछले 10 वर्षों से, 26: कोट गांव व 20: कोट डेरीन गांव पिछले 20 वर्षों से, 4.5: कोट गांव व 7.5: कोट डेरीन गांव में पिछले 30 वर्षों से महिलाएं टेलीविजन का प्रयोग कर रही हैं।

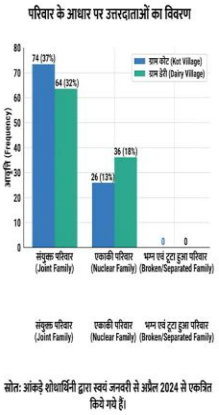

उपर्युक्त तालिका–24 में परिवार के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 37: कोट गांव व 32: कोट डेरीन गांव सयुंक्त परिवार, 13: कोट गांव व 18: कोट डेरीन एकाकी परिवार में महिलाएं पाई गई। 0: कोट गांव व 0: कोट डेरीन गांव में भग्न एवं टुटा हुआ परिवार में महिलाएं पाई गई।

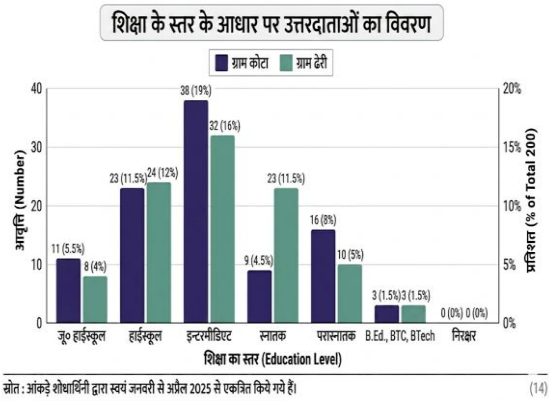

उपर्युक्त तालिका–25 शिक्षा के स्तर के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 5.5: कोट गांव व 4: कोट डेरीन गांव में जू० हाईस्कूल, 11.5: कोट गांव व 12: कोट डेरीन गांव में हाईस्कूल, 19: कोट गांव व 16: कोट डेरीन गांव में इन्टरमीडिएट, 4.5: कोट गांव व 11.5: कोट डेरीन गांव में स्नातक, 8: कोट गांव व 5: कोट डेरीन गांव में परास्नातक, 1.5: कोट गांव व 1.5: कोट डेरीन गांव में B.Ed., B.T.C., B.Tech., 0: कोट गांव व 0: कोट डेरीन गांव में निरक्षर महिलाएं शिक्षा के स्तर पाई गई हैं।

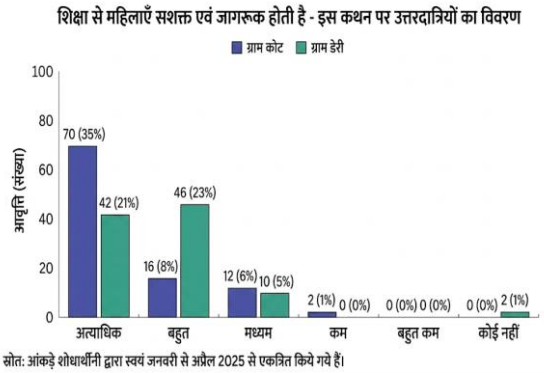

उपर्युक्त तालिका–26 शिक्षा से महिलाएँ सशक्त एवं जागरूक के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 35: कोट गांव व 21: कोट डेरीन गांव में अत्याधिक, 8: कोट गांव व 23: कोट डेरीन गांव में बहुत, 6: कोट गांव व 5: कोट डेरीन गांव में मध्यम, 1: कोट गांव व 0: कोट डेरीन गांव में कम, 0: कोट गांव व 0: कोट डेरीन गांव में बहुत कम, 0: कोट गांव व 1: कोट डेरीन गांव में कोई नहीं महिलाओं शिक्षा के आधार पर जागरूक पाई गयी हैं।

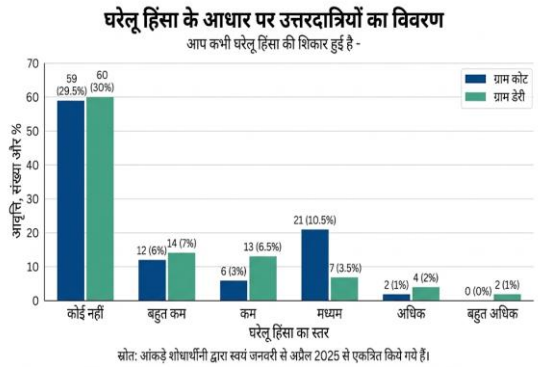

उपर्युक्त तालिका–27 घरेलू हिंसा के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। प्रस्तुत तालिका में 29.5: कोट गांव व 30: कोट डेरीन गांव में कोई नहीं, 6: कोट गांव व 7: कोट डेरीन गांव में बहुत कम, 3: कोट गांव व 6.5: कोट डेरीन गांव में कम, 10.5: कोट गांव व 3.5: कोट डेरीन गांव में मध्यम, 1: कोट गांव व 2: कोट डेरीन गांव में अधिक, 0: कोट गांव व 1: कोट डेरीन गांव में बहुत अधिक महिलाएं घरेलू हिंसा का शिकार बनी हैं।

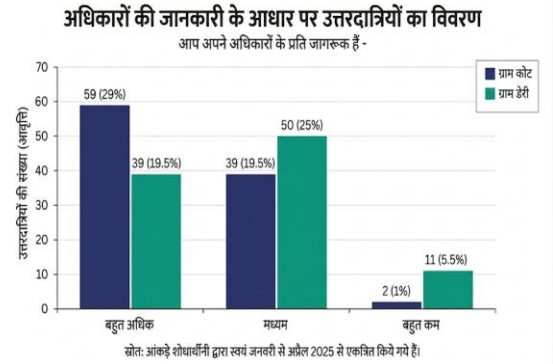

उपर्युक्त तालिका–28 अधिकारों की जानकारी के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। इस तालिका में 29: कोट गांव व 19.5: कोट डेरीन गांव में बहुत अधिक, 19.5: कोट गांव व 25: कोट डेरीन गांव में मध्यम, 1: कोट गांव व 5. 5: कोट डेरीन में बहुत कम अधिकारों की जानकारी महिलाओं को पता हैं।

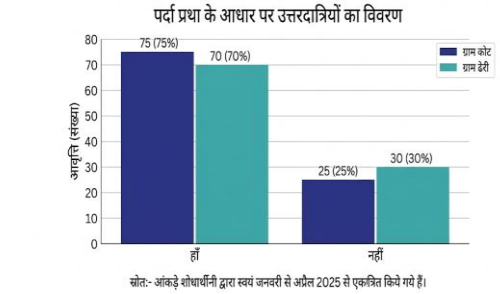

उपर्युक्त तालिका–29 पर्दा प्रथा के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। इस तालिका में 75: कोट गांव व 70: कोट डेरीन गांव में ग्रामीण महिलाएं पर्दा प्रथा पाई गई।

उपर्युक्त तालिका–30 में अधिकारों के प्रति वंचित होने के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। इस तालिका में 22: कोट गांव व 19: कोट डेरीन गांव में ग्रामीण महिलाएं अधिकारों के प्रति वंचित होने से जुड़ी हुई हैं।

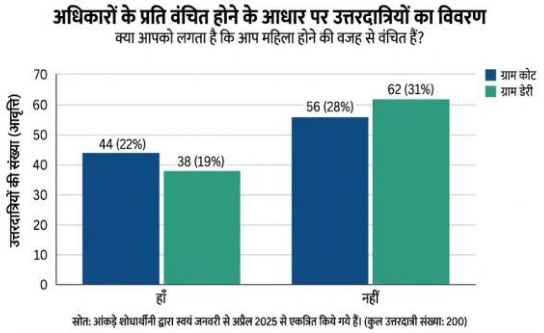

उपर्युक्त तालिका–30 में अधिकारों के प्रति वंचित होने के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। इस तालिका में 22: कोट गांव व 19: कोट डेरीन गांव में ग्रामीण महिलाएं अधिकारों के प्रति वंचित होने से जुड़ी हुई हैं।

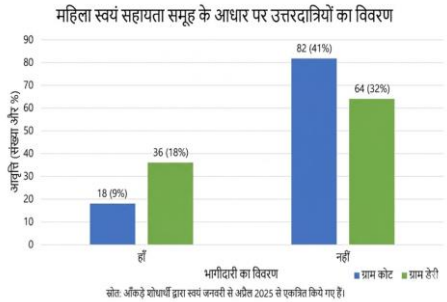

उपर्युक्त तालिका–31 में महिला स्वयं सहायता समूह के आधार पर उत्तरदात्रियों का विवरण दिया गया है। इस तालिका में 9: कोट गांव व 18: कोट डेरीन गांव में ग्रामीण महिलाएं, महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध गौतमबुद्ध नगर के दादरी ब्लॉक के ग्राम कोट एवं ग्राम कोट डेरीन की 200 ग्रामीण महिलाओं पर आधारित है। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं।

आर्थिक स्थिति की दृष्टि से महिलाओं का मुख्य आय स्रोत पारिवारिक सहायता (कोट 42:, डेरीन 48:) है। स्वयं रोजगार अभी भी सीमित है (कोट 18:, डेरीन 10:)। कोट में 49: व डेरीन में 15: महिलाएँ भूमिहीन हैं, जो आर्थिक सशक्तिकरण की

सबसे बड़ी बाधा है। बैंकिंग से जुड़ाव (कोट 44:, डेरीन 25:–पिछले 10 वर्षों से) एक सकारात्मक संकेत है।

कौशल एवं उद्यमिता के क्षेत्र में सिलाई प्रशिक्षण (कोट 16.5:, डेरीन 18:), कंप्यूटर ज्ञान (कोट 14:, डेरीन 13:) तथा कुटीर उद्योग (कोट 17:, डेरीन 15:) में भागीदारी देखी गई। तथापि दोनों गाँवों में लगभग 21: महिलाओं के पास कोई प्रशिक्षण नहीं है।

पशुपालन प्रमुख आजीविका स्रोत बना हुआ है– भैंस पालन (कोट 33:, डेरीन 45:) व गाय पालन (कोट 25:, डेरीन 39:) में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी है।

आधुनिक उपकरणों जैसे वाशिंग मशीन, गैस चूल्हा, टेलीविजन व रेफ्रिजरेटर का उपयोग दोनों गाँवों में 20 वर्षों से हो रहा है, किंतु कंप्यूटर उपयोग में गहरा डिजिटल विभाजन है (कोट 26:, डेरीन मात्र 0.5:)।

सामाजिक स्थिति में शिक्षा का स्तर उत्साहजनक है– दोनों गाँवों में निरक्षरता शून्य है। अधिकारों के प्रति जागरूकता (कोट 29:, डेरीन 19.5:– बहुत अधिक) भी बढ़ी है। किंतु पर्दा प्रथा (कोट 75:, डेरीन 70:), लैंगिक भेदभाव (कोट 32:, डेरीन 54:) तथा घरेलू हिंसा (कोट 10.5:, डेरीन 3.5:– मध्यम स्तर) अभी भी गंभीर चुनौतियाँ हैं।

समग्र निष्कर्ष–समस्त आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट है कि ग्रामीण महिलाएँ बैंकिंग, शिक्षा, पशुपालन, कौशल विकास एवं आधुनिक उपकरणों के उपयोग में सकारात्मक प्रगति कर रही हैं। तथापि भूमिहीनता, पर्दा प्रथा, घरेलू हिंसा, लैंगिक भेदभाव एवं सीमित स्वरोजगार जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। विकास के लाभ सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच रहे, इसलिए सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं को मिलकर शिक्षा, कौशल विकास, वित्तीय संसाधन एवं सामाजिक सुरक्षा की समान पहुँच सुनिश्चित करनी होगी, तभी एक सशक्त एवं समावेशी ग्रामीण समाज का निर्माण संभव होगा।

सन्दर्भ सूची–

1. जी, रवींद्रन .(जून, 2010). भारत में रोजगार और बेरोजगारी की स्थिति। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खण्ड 45, अंक 23, पृ. 19–25।
2. गुप्ता, निधि. (2012). भारत में ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण और विकास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस, खण्ड 2, अंक 3, पृ. 45–52।
3. जौहरी, महालक्ष्मी. (2014). महिलाएँ और सामाजिक–आर्थिक विकास। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, खण्ड 55, अंक 2, पृ. 201–210।
4. राय, अर्चना. (2013). भारत में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च, खण्ड 2, अंक 4, पृ. 120–126।
5. कुमार,सनोज व कंवरिया,विनोद कुमार. (2024). आधुनिक साहित्य में महिला चिन्तन के माध्यम से दिव्यांगों के जीवन में शैक्षिक तकनीकी का प्रभाव, पृ. 101–113, ISBN No-: 978–81–970235–4–5
6. अग्रवाल, बीना (2010). ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण. आर्थिक एवं राजनीतिक साप्ताहिक, खंड 45, अंक 23, पृ. 67–75।
7. शर्मा, सुनीता (2019). ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक भागीदारी. कुरुक्षेत्र पत्रिका, खंड 67, अंक 5, पृ. 22–28।
8. वर्मा, अंजना (2020). स्वयं सहायता समूहों द्वारा ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण. ग्रामीण विकास जर्नल, खंड 36, अंक 4, पृ. 201–210।
9. गुप्ता, रेखा (2018). ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति. स्वास्थ्य एवं समाज, खंड 12, अंक 1, पृ. 44–52।